पनघट व कत्थक

डॉ. वन्दना चौबे

ठुमरी के अतिरिक्त कत्थक नृत्य में पनघट का वर्णन कवित्त में भी मिलता है। कवित्त द्वारा अभिनय की परम्परा कत्थक नृत्य में रीतिकाल से चली आ रही है। ब्रज भाषा में श्रृंगार रस व नायक नायिका भेद के स्फुट छंदों की रचना इसी काल में हुयी। किसी कविता अथवा पद को नृत्य के बोलों के साथ लय और ताल में बांधकर उसके प्रत्येक शब्द को उसी प्रकार भाव बताते हुए प्रदर्शित करना 'कवित्त' कहलाता है। गोपिकायें पनघट पर किस प्रकार सोलह श्रृंगार कर जल भरने जाती थी, कवित्त द्वारा इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन प्रसिद्ध कत्थक विज्ञ पं. सुन्दर प्रसाद जी ने किया है।